आधा पन्ना पूरी बात

(काव्य-संग्रह)

मनीष पारीक

Copyright © Manish Pareek
First Edition : October, 2012

Computer Graphics : Banwari Kumawat 'Raj'

Cover Design by Taru Team

All right reserved.

Email comments to : talentpublication@gmail.com

Published by :
Talent Publications
1787, Near Bheet Ke Balaji
Govindraojion Ka Rasta
Chandpole Bazar, Jaipur, Rajasthan - 302001

No part of this book may be reproduced or utilized in any form or by any means, electronic or mechanical including photocopying , recording or by any information storage and retrieval system without the express written permission of the publisher.

The moral right of the author has been asserted.

Printed by : Taru Offset, Jaipur

Price : ₹ 50/-

ATTENTION EDUCATIONAL INSTITUTIONS AND CORPORATIONS
This book is available at quantity discounts with bulk purchase for educational, business or sales promotional use. For information, please send email to *talentpublication@gmail.com*

उन तेजस्वी और ओजस्वी
प्रकाश-पुंजों को
जिन्होंने दुनिया को
प्रकाशित किया है

आधा पन्ना और पूरी बात
कैसे लिखूँ, सारे जज़्बात
लफ़्ज़ कहे, मैं तेरे साथ
उठा कलम, थाम ले हाथ!

अनुक्रम

मन की बात

जीवन का रहस्य 17
सोचो तो सही 18
मन का पत्ता 19
हँसी जिनकी लबों से 21
मेरी किताब के पन्ने 22
मेरा बसंत 23
इजाजत दे दें 24
सितारों से पलते हैं 25
ज़िंदगी है 26
कोई तो मशाल लेगा 27
एहसास-ए-कमतरी 28
शिकायत मत कर 29
थोड़ा सा जी लीजिए 30
आपके लिए 31
नई चादर 32
फूल किताबों के 33
दर्द का रिश्ता 34
ज़िंदगी में 35
फलसफे हैं ज़िंदगी के 36
यादें हैं 37
आपकी कहानी 38
ज़िंदगी के रिश्ते 39
मुस्कुरा के कह दिया 40
मन की प्यास 41
दादी मां के दाने 42
मालिक के नाम 43
वक़्त से जीत जायेंगे 44
जगजीत सिंह के लिए 45
सोचा ना था 46
कैसे साथ चल पाओगे 47
कैसे तेरा है 48
ऐसे कैसे 49
मन को अभ्यास है 50
मंदिर की चोटी पे काग 51
लोग खरे हैं 52
बस इतना अरमान 53
कुछ लोग 54
ख्वाबों से दोस्ती है 55
वो साया है 56
हवा के परिन्दे 57
मन मयूर 58
जमीं को आसमां कर ले 59
देव प्रार्थना 60
मुस्कुरा के मिल 61
ऐसे डरते हैं लोग क्यों? 62
अभिमन्यु 63
मन खट्टे हैं... 64
कितनों के घर बने
जरूर दो 66
क्या बताएं? 67
बदतमीज़ी 68
आधा पन्ना पूरी बात 69
खानदान के नाम 70
छोटे दिल लोग 71
अच्छे लोग 72
क्या होगा 73
किए जा रहे हैं 74
बेकसी 75
सौंदर्यपूर्ण है 76
जीवन का रहस्य 77
जब से मैंने प्रीत लगाई 78
एक बस फुर्सत नहीं 79
लोग 80
पंछी तो पंछी रहेगा 81
मेरी आँखें उन्हें पसंद आती हैं 82

...और ये हालात

भ्रष्टाचार 85
बेईमानी का मुजरा 86
रिश्तेदारियाँ 87
जख्म धोता है शहर 88
हाकिम का प्रचार 89
नाम के सरकार 90
बख्शीश मेहनताना है 91
एक दिन 92
इन हालातों पर कह दिया 93
आसमां दिखायेंगे 94
क्षणिकाएं 95

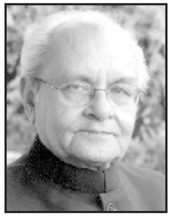

डॉ. हरिराम आचार्य
राष्ट्रपति सम्मानित

भूमिका

एक विचित्र संयोग में युवा रचनाकार श्री मनीष पारीक से मेरी पहली प्रत्यक्ष मुलाकात हुई। मैं हृदयाघात के उपचार में बिस्तर पर लेटा था, तभी अपने संगीत प्रशिक्षक श्री ब्रजमोहन शर्मा के साथ मेरे कक्ष में इनका आगमन हुआ, इस अनुरोध के साथ कि इनके काव्य-संग्रह 'आधा पन्ना पूरी बात' की भूमिका मैं लिखूं। चकित भाव से मैंने इन्हें देखा। इतना तो सुनता आ रहा था कि मनीष पारीक जुझारू युवा नेता हैं और जयपुर नगर निगम के वर्तमान उपमहापौर हैं, किंतु मेरे समक्ष वे कवि के रूप में आये। बातचीत का सिलसिला शुरू हुआ तो पता चला कि ये संगीत-रसिक भी हैं, स्वयं गायक भी हैं, मंच वक्ता भी हैं, आध्यात्मिक चिंतक भी हैं और प्रतिबद्ध राजनीतिक नेता तो हैं ही।

अस्वस्थता के कारण मेरी बोलती बंद थी, पर इनकी वाग्मिता पर कोई प्रतिबंध नहीं था। इसलिए वे स्वयं को अभिव्यक्त करते रहे और मैं संयमित श्रोता की तरह इनसे परिचित होता रहा। इस एकालाप (मोनोलॉग) के कुछ दिन बाद दुबारा ये अकेले आए। पर इस बार इनके हाथों में इनके काव्य-संग्रह का कम्प्यूटर प्रिंट था। इस बार भाषण-पक्ष कम और काव्य-पाठ का क्रम अधिक चला जो मेरी रुचि का विषय था। इन्होंने सहज उन्मुक्तता के साथ अपनी कविताएँ पढ़ीं, उनकी पृष्ठभूमि पर प्रकाश डाला, राजनीति परिवेश में किस प्रकार उनका विचारक सामाजिक सरोकारों से जुड़कर उन्हें कविता में ढालने को बेचैन हो उठता है, उसी क्रम में जो शब्दों में उतरकर आता है, उसका संग्रह तैयार हो जाता है-यही सब उस दिन की बातचीत का हिस्सा था, पर इस बार की मुलाकात एकांत में एक मौलिक रचनाकार से साक्षात्कार थी। जाते-जाते मनीष अपनी रचनाएं मेरे पास पढ़ने के लिए छोड़ गए।

'आधा पन्ना पूरी बात' बहुत चाव से मैंने पढ़ा। सबसे पहले तो शीर्षक ने ध्यान खींचा। मैंने कभी वाग्देवी सरस्वती से एक प्रार्थना-गीत में मांगा था-'बोलें कम, पर कहें अधिक, ऐसे उजियाले अक्षर दे माँ।' कम शब्दों में पूरी बात कह जाने की शक्ति ही व्यंजना शक्ति है, जो अच्छी कविता का मर्म भी है और धर्म भी लेकिन यह शक्ति ही व्यंजना शक्ति है, जो अच्छी कविता का मर्म भी है और धर्म भी लेकिन यह शक्ति किसी अज्ञान की कृपा और अथक साधना से ही मिल पाती है। मनीष की कविता में यह शक्ति अवतरित हो, तभी यह शीर्षक सार्थक हो सकेगा, किंतु अभी प्रथम काव्य-संग्रह में उसका संकल्प भी कम सार्थक नहीं है।

'हम' कवि मनीष का तख़ल्लुस है, जो ग़ज़लनुमा रचनाओं में प्रयुक्त हुआ है, जैसे-

दर्द होता है उन्हें जो 'हम' मुस्कुराते हैं
ये दोस्त हैं मेरे जो दुश्मनी निभाते हैं।

ग़ज़ल फारसी से उर्दू में आई एक साहित्यिक विधा है, जिसकी एक 'बहर' होती है, जिसे निभाते हुए शेर कहे जाते हैं। मनीष के लहजे में उर्दू के अल्फ़ाज़ है, तख़ल्लुस है, शेर का लिबास है, मगर इस संग्रह को ग़ज़ल संग्रह नहीं कहा जा सकता। इसे काव्य-संग्रह का ही नाम दे सकते हैं। कविता के उन्मुक्त कलेवर में बहुत-कुछ समाहित किया जा सकता है। एक विचार, एक उद्‌गार, छंद-अछंद, गीत-अगीत, क्रम-अक्रम यानी सब-कुछ जो सहज अभिव्यक्ति में शब्दबद्ध किया जा सके। स्वयं कवि ने लिखा है-''मेरे शब्दों को कविता न कहें, इन निरे शब्दों को पढ़ने के बाद जो प्रश्न, जो भाव आपके मन में बनेंगे, वो ही मेरी कविता है। ...अपने सार्वजनिक जीवन में रोज़मर्रा की मर्यादाओं और आनंद के साथ हुए अनुभवों को मन की भाषा देकर सहजता से लिख दिया है।'' इतनी स्पष्ट स्वीकारोक्ति के बाद कवि मनीष की काव्य-रचनाओं पर समीक्षात्मक टिप्पणी करने की कोई आवयश्कता ही नहीं रह जाती। न उनका किसी कथ्य विशेष के प्रति आग्रह है, न ही किसी शिल्प के प्रति मोह। इसलिए किसी साहित्यिक विधा या शास्त्रीय बंदिश के अभ्यास को उनकी कविताओं में खोज पाना कठिन ही होगा। उनकी अभिव्यक्तियों में वर्ड्सवर्थ की परिभाषानुसार 'प्रबल अनुभूतियों के विस्फोट' का आभास अवश्य है। कतिपय उदाहरण-

सोचो तो सही, कुछ होगा कि नहीं।

×××

मिले ना सुर जिन तारों को
पूछते रहे वो फ़नकारों को।
जिसने अंतर की ज्योति पाली
ढूंढा न फिर उजियारों को।

×××

आधा पन्ना और पूरी बात
कैसे लिखूँ सारे जज़्बात।

×××

थक के कट चुके हैं जो पुराने थे ख़याल
अब मैं नये ख़यालों की पैदावार हूँ।

×××

है नसीब कि 'हम' को कीचड़ में खिलना है
सदियों से होता आया, इसलिए अड़ा हूँ।

कहीं-कहीं व्यंग्य की पैनी धार दिल को छू जाती है-

बेईमानी का मुजरा, शाम रंगीन है
ईमानदारी विधवा, दोपहर ग़मगीन है।

×××

इस क़दर चढ़े हैं, जैसे उतरना नहीं है
फलना-फूलना है, बस फिसलना नहीं है।

आज के भ्रष्टचार पर सीधी सपाटबयानी देखिए-

सड़क खा गया, वो रिश्ते का भाई है
बिजली नहीं जली बस, बिल का जँवाई है।

इस तरह 'मन की बात', 'और ये हालात' से रूबरू होता मनीष का कवि अध्यात्म के मनीषियों के अनुभूत परम सत्य का बखान करना नहीं भूलता-

मीरा, सूर, कबीर, रैदास
दूरस्थ ज्ञान के कितने पास
सबके लिए है खुला आकाश।

अलबेलेपन की अल्हड़ता के साथ अपने उद्गारों को शब्दों में पिरोने वाले मनीष पारीक के कवि रूप को मेरी हार्दिक शुभकामना की उनका यह 'आधा पन्ना' हमेशा अपनी पूरी बात मन की सच्चाई के साथ कहता रहे।

शिक्षक दिवस, 2012
जयपुर

अपनेपन की कविताएं

मनीष पारीक को अगर आप एक राजनेता या सामाजिक कार्यकर्ता की तरह ही जानते हैं तो यह पहचान अधूरी है। वह मूलत: एक संवेदनशील रचनाकार हैं, जो संयोगवश राजनीति के क्षेत्र में भी हैं। उनके पास न केवल कवि हृदय है बल्कि सांसों में संगीत भी गहराई से रचा-बसा है। बिना किसी वाद्य के भी उनका गायन शब्द-दर-शब्द श्रोता के मर्म को स्पर्श करते हुए अमिट छाप छोड़ता है। प्रस्तुत संग्रह में पारीक की रचनाएं अच्छे की कामना के लिए रचे गए हार्दिक शब्द हैं। दुनिया को खूबसूरत बनाना उनका खूबसूरत सपना है और इस सपने को पूरा करने के लिए वे हर किसी उचित माध्यम का उपयोग करते हैं। उनके लिए कविता राजनीति नहीं है, लेकिन राजनीति को वे कविता की तरह देखना चाहते हैं। संवेदनशीलता, इंसानियत, सहजता, अपनापन और आपसदारी उनके काव्य का मूल भाव है। इन रचनाओं को इसी सद्भावना के साथ पढ़ा और समझा जाना चाहिए।

इस संग्रह की रचनाएं सामाजिक, राजनैतिक पूर्वाग्रहों से मुक्त एक ऐसे कवि की रचनाएं हैं, जो जगत को समग्रता में देखने में विश्वास करता है। जब मनीष कहते हैं कि-

सब कितना सुहावना सौंदर्यपूर्ण है
आंखों के प्रेम से सब माधुर्यपूर्ण है।

तो उनकी मानवतावादी दृष्टि और जगत के प्रति गहरा विश्वास साफ-साफ दिखाई देता है। आशा, विश्वास, स्नेह, अपनत्व, साझापन, प्रकृति और आत्मिक सौंदर्य यह सब पहलू मनीष पारीक की कविताओं में दिखाई देते हैं, इसलिए यह कहने में कोई संकोच नहीं होना चाहिए कि पारीक, जो कि 'हम' उपनाम से लिखते हैं, पूरी तरह सामूहिकता में विश्वास करने वाले सकारात्मक रचनाकार हैं। इस प्रस्तुति पर मैं उन्हें हार्दिक बधाई देता हूं।

-मायामृग

आवरण चित्रकार

सृजन सम्मान-1995, भोपाल (म.प्र.), कलारत्न-1998, बिहार एवं सृजन सम्मान-2003, रायपुर (छत्तीसगढ़) से सम्मानित कुंअर रवीन्द्र की अनेक कृतियां विविध पत्र-पत्रिकाओं, पुस्तकों के आवरण पर प्रकाशित। कई एकल और सामूहिक प्रदर्शनियों में भागीदारी। संपर्क : 09425522569

लेखकीय

आपका आभारी हूँ कि आपने अपने पढ़ने-विचारने और प्रतिक्रियात्मक प्रोत्साहन के लिए मुझे चुना बावजूद इसके कि यह मेरा पहला कविता संग्रह है, आपने पढ़ने के लिए मुझ पर विश्वास किया, आपका यह भरोसा ही मेरी सबसे बड़ी प्रेरणा है। मेरे शब्दों को कविता ना कहें, इन निरे शब्दों को पढ़ने के बाद जो प्रश्न, जो भाव आपके मन में बनेंगे वो ही मेरी कविता है। इसलिए मैं लिखने वाला जरूर हूँ, पर कवि आप ही होंगे।

'हम' तख़ल्लुस भी इस बात का सबूत बना है कि रचना कार्य में, मैं साथ भर खड़ा हूँ।

उन सबका आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने मेरे अंतर्मन को जागृत रखा और इस सलौनी दुनिया को ज्यों कि त्यों स्वीकार करने की ईमानदारी मुझ में पैदा की।

चालीस बरस की ज़िंदगी में ये ही समझ पाया हूँ कि मुझे लोगों से प्यार है, मैं लोगों के बिना नहीं रह सकता। लोगों की चाहत ही मुझे खुश रखती है और इसीलिए मैं 'हम' हूँ।

मैं उन सभी अच्छे लोगों को प्रणाम करता हूँ, जिन्होंने इस दुनिया को खूबसूरत बना रखा है। मैं तमाम बुरे हालातों का भी शुक्रगुजार हूँ, जिन्होंने मेरी नजर में लोगों को अच्छा और समझदार बनाए रखा है।

संसार के सबसे बड़े सांस्कृतिक राष्ट्रवादी संगठन की उदारता की मिसाल भी ये रचनाएं हैं कि लगभग आधी ज़िंदगी इसके साये में रहने और पूरी तरह उसके आवरण में रहने के बावजूद मेरी निजता बिल्कुल महफ़ूज रही और विचारधारा में आबद्ध तो मैं हूँ ही। अपने सार्वजनिक जीवन में रोजमर्रा की मर्यादाओं और आनंद के साथ हुए

अनुभवों को मन की भाषा देकर सहजता से लिख दिया है। प्रकृति, संगीत और मानवीय संवेदनाएं मुझे सर्वाधिक आकर्षित करती हैं। निशदिन सक्रिय रहने की अपनी सीमा के बीच साथ देने, साथ रहने, साथ चलने और साथ बढ़ने के ध्येय को पुष्ट करती परिस्थितियों के बीच जीवन चलता रहे, यही कामना ईश्वर से करता हूँ।

अपने माता-पिता, धर्मपत्नी, परिवारजनों, रिश्ते रखने वालों और मित्रों को भी धन्यवाद देना चाहता हूँ, जिन्होंने सदा साथ निभाया और मुझे सहूलियतें दी, जिससे मैं 'हम' बना। अंत में डॉ. रामसहाय पारीक का धन्यवाद, जिन्होंने मेरी रचनाओं को तराश कर यह रूप दिया कि वे आपके हाथ में आने लायक बन सकी। श्री मायामृग का आभार व्यक्त करना चाहता हूँ कि वे मेरे जैसे को भी लिखने-छपने को प्रेरित कर सके। टेलेंट पब्लिकेशन्स के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ कि उन्होंने मेरे टूटे-फूटे शब्दों को सुन्दर पुस्तकाकार दिया है।

-मनीष पारीक

मन की बात

जीवन का रहस्य

तेजस, अंतस, पुंज, प्रकाश, सबके लिए है खुला आकाश
जीवन प्रवास या सत्य प्रयास, जीवन दर जीवन सबक उल्लास।

मीरा, सूर, कबीर, रैदास, दूरस्थ ज्ञान के कितने पास
माता प्रकृति, अल्प प्रयास, जीवन महके पूर्ण विकास।

जीवन प्रेम का निपट विश्वास, आत्म आनन्दित, कामना त्रास
परहित कर्म बस स्वयं के पास, मानुष मानस प्रेम विकास।

सत्य चित्त का सबमें वास, सुख आनन्द हैं सभी के पास
जीवन चैतन्य कर्मफल नाश, कान्हा मुरली, राम वनवास।

शांत चित्त आनन्द अहसास, पूर्व निर्धारित या मानव प्रयास
देश काल फल, जन्म की आस, ध्येय सत्य और ज्ञान के पास।

सोचो तो सही

सोचो तो सही, कुछ होगा कि नहीं

देख के अँधेरा, इस उजालदान में
ना उदास हो ना निराश हो,
स्याह काली रात भी, उजाले में बही,
सोचो तो सही...

चार दिन है जो बिता के जाना है
क्या है कंगाली, और क्या खजाना है
यहीं हिसाब तेरा, ना खाता ना बही,
सोचो तो सही...

मिले जो नरम दिल, मुस्कुरा लिए
मिले जो सख्त दिल, तो गुर्रा लिए
यहीं सुन ली सारी, यही पे कही
सोचो तो सही...

है लाखों गैर तो, अपने हजार है
किसी को जुनूं से, सुकूं से प्यार है
फितरत है अलग अलग, आदमी है कई
सोचो तो सही...

मन का पत्ता

मन का पत्ता चटखा चटका
चाँद सांझ पर अटका अटका
मन की माला का मनका मनका
तन घरोंदे का तिनका तिनका
क्यों हैं इतने बेजुबान
कितना बेबस है इंसान...

हार गया मन एक लड़ाई
झट दूजी ने तलवार उठाई
बेबस साहस हारा सा था
ना अवसर ने आवाज़ लगाई
मुस्कुरा रहा है ज्ञान
बस सफलता ही है ईमान...

बच्चा-बच्चा सच्चा सा है,
सच्चा-सच्चा कच्चा सा है
कच्चा-कच्चा मंहगा है तो
पक्का-पक्का सस्ता सा है
हल हो गये प्रश्न सभी बस
अब मुश्किल में है जान...

मिले ना सुर जिन तारों को
पूछत रहे वो फनकारों को
जिसने अंतर की ज्योति पा ली
ढूँढा नहीं फिर उजियारों को
कठिन प्रश्न भी है आसान
आस भरा है जब ये जहान...।

हँसी जिनकी लबों से

हँसी जिनकी लबों से, आँख तक जाती है
कुदरत भी इन्हीं को देख मुस्कुराती है।

मासूम चमक आँखों की, सितारों से बढ़के है
उतर कर आसमाँ से, सितारे गिनने आती हैं।

भला लगता है कोई, कुछ तो भला होगा
पर देखने की कला, भला किसको आती है।

मिसालें दे जो हर कोई, मशालें जलती रहती हैं
चमक जो रोशनी की है, वही दिल को लुभाती है।

दिया ज़र्रा तुझे तेरा, इसे तू ही संभाले रख
बुझाने हर तरफ से चिरागां हवायें आती हैं।

नज़ाकत दे ही दी है जो तुझे इंसानी फितरत की
ऐबो-हुनर को देखकर, खुदाई मुस्कुराती है।

मेरी किताब के पन्ने

पन्ने सारे पढ़ लिए, जो उसने मेरी किताब के
औरों के लिए लिख दिए, हर्फ़ ये महताब के।

आसमाँ से जो टपकते, सब ज़मीं पाते नहीं
इन्तज़ार-ए-ज़िंदगी है, जैसे कोई ख़िताब में।

नूर की चादर बिछी है, हाथ मेरे कुछ नहीं
लूटने वाले बहुत हैं, उस आफ़ताब के।

ज़िंदगी पड़ी थी, चैन से जीने के लिए
काट दी बेसब्र होकर, फ़िराक में रुआब के।

जो मिला है शुक्र कर, जीने को बहुत है
चन्द कतरे ही बहुत हैं, 'हम' उसकी आब के।

मेरा बसंत

उसकी उंगलियों पे, पीले फूलों को सजाया था
क्या मौसम था, क्या वसंत आया था।

पीली पहन के चुनरी, वागेश्वरी को पूजा था
पीले चावलो से माँ ने, मुँह मीठा कराया था।

प्रार्थनाएँ सब समवेत बोली थीं
हर बच्चा इक फूल सा मुस्कुराया था।

महके हुए थे मन सबके, फूल भी खुश थे
रूप ने सुगंध से, रिश्ता बनाया था

लब मुस्कुराते थे और आँखे बोलती थीं
रिश्ता था कोई 'हम' मुहब्बत नाम बताया था।

इजाजत दे दें

लिख दूँ दो बात, अगर आप इज़ाज़त दे दें
मेरे लफ़्ज़ों पे आपका साया बहुत है।

हँसने की कोशिश बहुत हुई मगर
आपकी अदाओं ने रुलाया बहुत है।

आदमी चाहे तो, कुछ कर नहीं सकता
हमसफर हैं कम, हमसाया बहुत है।

दोस्त भी बहुत रहे और मौसम भी
इसी मुहब्बत ने मुझे सताया बहुत है।

यूँ ही गुजर जाएँगे, तेरे कूचे से ज़िंदगी
'हम' ही नहीं आये, तूने बुलाया बहुत है।

सितारों से पलते हैं

खुशबू है यादें, जो झोंके चलते हैं
तन्हाई में तेरे दामन से हो के चलते हैं,
गुज़र जाएँगे कभी इस मुकाम से हम
कुछ कलम गुलाबों की बो के चलते हैं।

शिद्दत थी जिनकी चाहत, वो कर गुजर गये
जी ना सके ज़माने में वो घर में मर गये,
रोशनी थी जिनके आँखों की आब भी
रोशन है वो शमा, बस परवाने जलते हैं।

चल ना सके जी भर के साथ वो
रास्ते में छूटा, उनका हाथ जो,
गुम भले हुए हो, अब तक आबाद है
'हम' आसमाँ के साये में, सितारों से पलते हैं।

ज़िंदगी है

होश है किसे और किसे खबर मिलती है
ज़िंदगी बस अपने आप में मिलती है।

अपने हो ख्याल में तो भी कोई बात नहीं
ये मुई आप ही आप में क्यूँ मिलती है।

ज़िंदगी से सीखने का जज़्बा तो देखिए
ख़िजाँ भी यहाँ बहार में मिलती है।

कोई खरीदता है, क़ीमत चुकाकर इसे
बचे खुचों को उधार में मिलती है।

काट इसे ऐसे ही, या बना ले 'हम'
ज़िंदगी है, ये उपहार में मिलती है।

कोई तो मशाल लेगा

किसको पड़ी है यहाँ कौन सुनेगा
तुझको देगा कि, अपनी साँस लेगा।

माँ की उंगलियाँ कभी चलना सिखाती थी
अब आदमी है होशियार खुद ही दौड़ लेगा।

उड़ा के लाल कपड़ा रेल रोकनी है
अब कौन है, जो दुपट्टा दाँतों तले लेगा।

तहज़ीब पलती थी, कभी शहर के लिए
अब वो बच्चों का पेट भरेगा।

किसके लिए जमा कर रहा है दौलतें
कोई नहीं है, जो घर का पता देगा।

ये जितनी लिखी है, मायूसी नहीं है
कोई तो 'हम' हाथों में मशाल लेगा।

एहसास-ए-कमतरी

एहसासे कमतरी इस कदर थामी रही
हर एक शख़्स में कुछ न कुछ खामी रही।

रोज निकलते रहे, घर से कुछ करने के लिए
रोज नई गलियाँ उन्हें बुलाती रहीं।

पढ़ ना पाए थे जो, ज़िंदगी की किताब
परियाँ उन्हें जन्नत में बुलाती रहीं।

वे निकल गये थे मगरूरी में आगे।
ज़िंदगी उन्हें आवाज लगाती रही।

कर देंगे हर महफिल में 'हम' खुद को साबित
यही कमतरी ऊल-जलूल कराती रही।

शिकायत मत कर

कुछ मुकम्मल जहाँ नहीं है, कुछ मुकम्मल लोग
ग़र मुकम्मल शिकायतें हैं, तो फिर उनको भोग।

जो शिकायत रहे जहाँ से, फिर जहाँ भर की शिकायत
कह ले सुन ले, कर दे सह ले, जीवन भर का रोग।

जो नहीं बर्दाश्त करना, सीख लीजे माफ करना
दुनिया की आपाधापी में, साधे नहीं कोई जोग।

दुनिया सुख की आस है, दुनिया दुख का सार
लेकिन 'हम' भले लगते हैं, हँसते-गाते लोग।

थोड़ा सा जी लीजिए

इतना तो कीजिए, थोड़ा सा जी लीजिए
सूरज को ले लीजिए, चाँद को घर की जिए
थोड़ा सा जी लीजिए...

सितारे रख लीजिए, नदिया को पी लीजिए
बर्फ ढंके पहाड़ आपके, मौज मस्ती कीजिए
थोड़ा सा जी लीजिए...

धरती नाप लीजिए, आकाश बाँध लीजिए
इन्द्रधनुष से खेलिए, सारे रंग ले लीजिए
थोड़ा सा जी लीजिए...

फल-फूल सब लीजिए, रस-रंग अपने कीजिए
अमृत मधु सब आपके, खुद को तृप्त कीजिए
थोड़ा सा जी लीजिए...।

आपके लिए

आपकी खुशी का इतना तलबगार हूँ
कि खुद के दर्द का गुनहगार हूँ।

हो सकता है आपको भरोसा ना हो
पर मैं अपने आप में ऐतबार हूँ।

रोज देती है ज़िंदगी उलझन नई
और मैं इन्हीं उलझनों में खुशगवार हूँ।

पक के कट चुके हैं जो पुराने थे ख़याल
अब मैं नये ख़यालों की पैदावार हूँ।

दुनिया के तूफानों से इतना रिश्ता है
हर किसी के साथ चलने को तैयार हूँ।

नई चादर

है नई चादर, जिस पे फूल खिले हैं
किसने सुकून से मेरा बिस्तर लगा दिया

कर गुज़रने को उठा था, कुछ देर पहले
उनकी कारगुज़ारी ने फिर से सुला दिया

तितलियाँ सारी मेरे तकिये पे आती हैं
मैंने खुशी से, उसका पता बता दिया

आती है खूब नींद, मुझे थक के सोने पे
आये जो उनके ख्वाब, 'हम' फिर से जगा दिया।

फूल किताबों के

खुद के ख्वाबों को कैसे पाला था
खुद की तमन्ना को कैसे संभाला था।

अब है कि नए ख्वाब पलते ही नहीं
जो पा लिए अब संभलते नहीं हैं।

मिल भी जाएँगे तो क्या हो जाएगा
ये सोच आजकल वे संवरते नहीं हैं।

जिन गलियों की हसरत थी सदा से
उन्हीं गलियों से अब गुजरते नहीं हैं।

देख ली सूरत जो गौर से उनकी
अरमानों के शोले अब दहकते नहीं हैं।

वक़्त गुजरने का सबब इस कदर हुआ
सूखे फूल किताबों में महकते नहीं हैं।

दर्द का रिश्ता

दर्द होता है उन्हें, जो हम मुस्कुराते हैं
ये दोस्त है मेरे जो दुश्मनी निभाते हैं।

उनकी हसरत हमारी फितरत ना हुई
बस इसी ख्याल से वो रूठ जाते हैं।

पूछते हैं लोग उनसे सवाल हक़ीक़त का
वो बड़ी मासूमियत से टाल जाते हैं।

जान ही जायेगी ये दुनिया एक दिन
कैसे वो स्याह को सफेद बनाते हैं।

शिकायत नहीं हुई आज तक हमें
कितनी शिद्दत से 'हम' रिश्ते निभाते हैं।

ज़िंदगी में

हक़ अदा मैंने किए हैं, इस कदर ज़िंदगी में
तान कर सीना खड़ा हूँ आप ही की बंदगी में।

मेरी कुछ कह ना सका, बस आपकी सुनता रहा
खुद का ख़याल आया नहीं, इस तमाम ज़िंदगी में।

सारे मतलब बता दिए, शहर भर के पंडितों ने
मतलबी क्यूंकर हुए हैं, सारे बंदे ज़िंदगी में।

कंधा है मेरा और बंदूकें उनकी अपनी है
ऐसे बहादुर खूब मिले, मुझको जंग-ए-ज़िंदगी में।

चाँद, आसमाँ, तारे बादल, सारे तेरे अपने हैं
दिल बड़ा करके पाले, 'हम' अपनी ज़िंदगी में।

फलसफे हैं ज़िंदगी के

फलसफे हैं ज़िंदगी के, और शब्द मेरे
कुछ कड़वी हक़ीक़तें हैं और ख्वाब तेरे।

ज़िंदगी को देखना आता नहीं था इस कदर
गीत मेरे बन गये हैं अब ख़याल तेरे।

कैसे बनेगी बात अपनी, जान मैं पाता नहीं
राह के रोड़े बने हैं, कुछ हिसाब तेरे।

साथ में ले के चले थे, जिन सवालों को कभी
इस मोड़ पर आके बने हैं, अब जवाब तेरे।

इन अंधेरों में रोशनी को, थामी थी मशाल मैंने
अब हाथ मेरे तीरगी है, और मशाल तेरे।

यादें हैं

यादे हैं बस, यादों का क्या करोगे
सूखे फूल किताबों के झोली में भरोगे।

भरोसा रहे खुद पे बस इतना कीजिए
दूसरे के भरोसे खुद, बूँद-बूँद झरोगे।

धरती से मुहब्बत की तो आसमाँ बनोगे
मिल न सकोगे कभी, दूर से तकोगे।

प्यास जितनी धरती, बूंद जितना जल
बादल से झूमकर, हर बार बरसोगे।

मिल भी जाओगे ग़र खुद ख़याली में
मुस्कुराओगे 'हम' बच के निकलोगे।

आपकी कहानी

दुनिया अगर सुहानी है, तो ये आपकी कहानी है
मशगूल हूँ आप ही में, आप ही को सुनानी है।

सोचते रहना आपको, सदा अच्छा लगा
ये बातें मगर अब, जमाने से छुपानी है।

हर कोई कर लेगा, आपको पसंद
मुसीबत तब है, जब ज़िंदगी बितानी है।

अदावत है जो खुद अब, पतवार बनेगी
हमें भी खुद से, दुश्मनी निभानी है।

किसको सुनाएं अब, कौन ये सुनेगा
किसके मतलब की, 'हम' ये कहानी है।

ज़िंदगी के रिश्ते

जिक्र है ना फिक्र है, फिर भी हमारे हैं
हैरां हूँ ज़िंदगी कैसे रिश्ते तुम्हारे हैं।

बिछ गये जो चादरों से, वो ना चाहिए
है नज़र में आसमाँ के जो सितारे हैं।

रूप से बदल गये, उम्र से वो ढल गये
चढ़ गये जो आँख में, दिल में उतारे हैं।

साथ चल रहे हैं, पता नहीं कौन है
साथ रह गये 'हम', वो ही हमारे हैं।

मुस्कुरा के कह दिया

होता है, होता है, मुस्कुरा के कह दिया
कौन कितना रोता है, मुस्कुरा के कह दिया।

साथ तो चलते नहीं थे, मेरे ही अज़ीज़
दूर तक ना चल सके तुम, मुस्कुरा के कह दिया।

छेड़ देने को बने थे, जो मेरे दिल ही के तार
गीत कोई हो ना सका, मुस्कुरा के कह दिया।

जीने को ये ज़िंदगी है, जी लीजिए ऐ हुजुर
एक पल भी जी ना सके, मुस्कुरा के कह दिया।

उम्मीदों से भरके 'हम' आये थे तेरे दर पे
आइयेगा फिर कभी मुस्कुरा के कह दिया।

मन की प्यास

मन है कि प्यासा ही रहे
ये संसार है प्यास का नाम
खुद ही नाम को क्यूं ना कहे
मन है कि प्यासा ही रहे...

डूब गये जो इस मन में
खोजा केवल जीवन में
पाये जो तट खड़ा रहे
मन है कि प्यासा ही रहे...

दिख जाए जो वो भी प्यास
मिल जाए वो, तो भी प्यास
रह जाये 'हम', प्यास रहे
मन है कि प्यासा ही रहे...।

दादी मां के दाने

माटी जो बेच दी, फिर पानी खरीदोगे
आने वाली पीढ़ीयों को क्या जवाब दोगे
ना चिड़िया, ना गिलहरी ना कबूतर आते हैं
दादी माँ के रखे दाने फिर किसे दोगे

चौक की जामुन काट दी, तोते कहाँ आयेंगे
बाग में इमारत टाँग दी, आम कहाँ खायेंगे
रंग जाते हैं अक्सर, रंग में हवाओं के
बदले हुए मगर, ये जज़्बात किसे दोगे
दादी माँ के रखे...

लड़ते हैं जमीं के लिए, खूब अपने भाई से,
देख रहे हैं बच्चे अपने, खिड़की पराई से,
बेच के जाएँगे, जब मालिक नौकरी पे
बदले हुए मगर, ये हालात किसे दोगे
दादी माँ के रखे...

चैन तो कहते हो दिल का तुम इसे,
कैसी है ये वहशत, ये पता किसे
दिल में दबा के कमजोरी का आलम
मुसीबतो के 'हम' जंगलात किसे दोगे,
दादी माँ के रखे...।

मालिक के नाम

ताकत है तुम्हारी, जो मैं इस कदर खड़ा हूँ
धूल से हवाओं से, बवंडर सा चढ़ा हूँ।

आलम ये देखने, आया नहीं था मैं
तेरी ही लड़ाई ले, मैदान में खड़ा हूँ।

चुना है तुमने तो, मालिक बने हो तुम
मैं तो बस यूं ही, दर पे पड़ा हूँ।

देखोगे जो गौर से, तो मुस्कुराओगे
काँच का टुकड़ा हूँ सोने में जड़ा हूँ।

है नसीब कि 'हम' को कीचड़ में खिलना है
सदियों से होता आया, इसलिए अड़ा हूँ।

वक़्त से जीत जायेंगे

ऐसे ही दिन बीत जायेंगे
क्या हम वक़्त से हार जायेंगे।

हम भी कुछ देर संभल पायेंगे
क्या बीते हुए दिन लौट आयेंगे।

कुछ दिन में हालात सुधर जायेंगे
क्या फिर हम वो कर पायेंगे।

एक दिन हम कर गुज़र जायेंगे
ऐसे ही दिन बीत जायेंगे।

दिन बीतेंगे हम संभलेंगे सुधर जायेंगे
कर गुज़रेंगे बस वक़्त से 'हम' जीत जायेंगे।

जगजीत सिंह के लिए

आप मुझसे दूर रहोगे, मुझे पता है
फूल गिरेगा हर शाख से, मौसम की खता है।

एक के हो जाओ, हो नहीं सकता
एक पाएगा, एक चाहेगा, मुझे पता है।

बस आंख में रख ले, ऐसे नहीं है आप
कोई दिल में रख मुस्कुराएगा, मुझे पता है।

रो के खिज़ां में सारा, चमन तर किया
बारिश में ना लौट पाएगा, मुझे पता है।

पुर सुकूं आवाज में पुरकशिश तरन्नुम को
अब वो ना गुनगुनाएगा, मुझे पता है।

तुम बुलाओगे रो के, भी तो ना लौटेगा
वक्त है 'हम' इल्म दिखाएगा, मुझे पता है।

सोचा ना था

बहुत दूर से आंखों के नूर हो जाओगे
सोचा ना था इक दिन दूर हो जाओगे।

जिस जमाने से दुश्मनी की थी
उसी जमाने में काफूर हो जाओगे।

सोच तो लो कितने अकेले हैं हम
अपने दिल को फिर क्या किस्से सुनाओगे।

क्या सोच के बने थे हमसफर 'हम'
मिलोगे सपने दिखा के रूठ जाओगे।

दर्द ही रह गया है अब मुहब्बत में
कभी 'हम' दिखायेंगे कभी तुम जताओगे।

कैसे साथ चल पाओगे

इक तड़प तक ना समझ पाओगे
क्या खाक तुम दिल लगाओगे।

कसक किसे कहते हैं जान नहीं पाते
कैसे किसी पे जान लुटाओगे।

दर्द देखते किसी का बैठे रहते हो
अब ना कहना के हमदर्दी निभाओगे।

याद तक 'हम' आते नहीं अकेले में
ज़िंदगी भर कैसे साथ चल पाओगे।

कैसे तेरा है

जब तू नहीं किसी का, तो कोई कैसे तेरा है
आयेगा जायेगा, बस गलियों का फेरा है।

ढूँढ के रखा है, नमूनों की भीड़ में
चुकायेगा कर्ज़ बस ये ही मेरा है।

किसके लिए जिया, किसके लिए मरा
सोच तो लें, क्या फ़लसफ़ा तेरा है।

मिलके मार देंगे, जो सर उठाया तूने
है तो गली के कुत्ते, पर नाम शेरा है।

देख के गहराई, हम तो हैरान हैं
चुटकलों ने कैसे, मंत्रों को घेरा है।

ऐसे कैसे

दर–दर भटके लोग, यहाँ पर ऐसे कैसे
बने हुए सिरमौर, यहाँ पर ऐसे कैसे।

रोटी खाकर पानी पीकर
भूले सब कुछ लोग, यहाँ पर ऐसे कैसे।

आई मुसीबत कुछ और जतन कर
कितने बदले लोग, यहाँ पर ऐसे कैसे।

बीबी बच्चे, देवी देवता
भरता नहीं है पेट, यहाँ पर ऐसे कैसे।

सोना–चाँदी–हीरे–मोती, महंगे हैं
सस्ते मंदे लोग, यहाँ पर ऐसे कैसे।

मन को अभ्यास है

मन को अभ्यास है जीने का
गरल सुधा को पीने का

ज़िंदगी रोज पुकारती है
वक़्त को निश दिन मारती है
काम लबों को सीने का
मन को अभ्यास है जीने का

चलना फिरना सीख लिया
रोटी कमाना सीख लिया
वक़्त नहीं पर जीने का
मन को अभ्यास है जीने का।

दो दूनी बस चार है
बाकी सब बेकार है
खेल 'हम' ये करीने का
मन को अभ्यास है जीने का।

मंदिर की चोटी पे काग

इस कदर चढ़े हैं, जैसे उतरना नहीं है
फलना फूलना है, बस फिसलना नहीं है।

वक़्त बदलता है चाँद तारों का
वक़्त बदलता है, मुफलिस ओ सितारो का।
एक वो ही है, जिनका वक़्त बदलना नहीं है
इस कदर चढ़े हैं, जैसे उतरना नहीं...।

आगाज़ अगर कोई है, तो अंजाम और होगा
इंतजाम गर फौरी है, तो दुआ में गौर होगा
क़िस्मत में जैसे उनके, बद्दुआ नहीं है
इस कदर चढ़े हैं, जैसे उतरना नहीं...।

मुश्किल में जान होती है तो मुस्कुराते है
ऐसे शख्स थोड़ा कम ही खौफ खाते है
बस ऐसे ही लोगों से उलझना नही है
इस कदर चढ़े हैं, जैसे उतरना नहीं...।

काग ने मंदिर की चोटी पे घर किया,
सोचा बुलंदियों को जैसे अपने सर लिया,
असलियत और है, सोचे से 'हम' हुआ नहीं है
इस कदर चढ़े हैं, जैसे उतरना नहीं...।

लोग खरे हैं

मित्र चित्र के पत्र हरे हैं
सत्र मौन अतृप्त धरे हैं।

पतझर बसंत ऐसे करे हैं
शाख-शाख से फूल झरे हैं।

धरती हरी, धरती परे हैं
प्रसन्न हृदय में स्वर्ग भरे हैं।

पंछी घटाएं उड़ान भरे है
प्यासे मन को तृप्त करे है।

नदी नाले उफान भरे हैं
प्रेम भरा ही एक तरे है।

प्रेम आस में सुगंध भरे हैं
हाल बुरे पर लोग खरे हैं।

बस इतना अरमान

थोड़ी सी खुशी दे दूँ,
और किसी को दुख ना दूँ
बस इतना अरमान है।

संवरे जीवन, महके फूल,
थोड़ी सी ज़िंदगी दे दूँ,
बस इतना अरमान है।

आप मुस्कुरायें झरे फूल,
आशा के मैं दीप जलाऊँ,
बस इतना अरमान है।

जगमग नूर आँख आपकी,
रोशनी में मैं नहा लूँ,
'हम' इतना अरमान है।

कुछ लोग

कुछ लम्हे और कुछ लोग सदा याद आते
मुस्कुराते हैं आँख में, और दिल में रह जाते।

बिना कुछ दिए बहुत कुछ पाते
जाने बिना ही ऐतबार कर जाते
ना कुछ छुपाते, ना कुछ बताते
बिन कहे ही सब समझ जाते
कुछ लोग सदा याद आते...

चाँद के माथे पे सितारे सजाते
बांटते खुशी और मुस्कान पाते
आ जाते इक बार तो दिल से ना जाते
हो के पराये भी अपने कहाते
कुछ लोग सदा याद आते...

खुद की छुपा आपस की सुनाते
वो इक दिन खुद कहानी बन जाते
कही गई है ये बात कितनी ही बार
'हम' भी वही पुरानी आपको बताते
कुछ लोग सदा याद आते...।

ख्वाबों से दोस्ती है

रात भर जागते हैं, दिन भर भागते हैं
ज़िंदगी तुझसे, थोड़ा सुकून माँगते है।

ख्वाबों से दोस्ती है, और मुहब्बत खुद से
जाने क्योंकर उनसे क्या-क्या माँगते हैं।

कमा लिया जो तूने, तो भी कमी रहेगी
'आ' की मात्रा है, फिर 'ई' की जाँचते हैं।

जिसने नहीं दिया, तब जवाब कोई
वे, सवालों की अब धूल फांकते हैं।

नींद आँखों में नहीं है, अरमानों की हुई
'हम' हैं कि बस उनके चेहरे को ताकते हैं।

वो साया है

नहीं सुनता सदा कोई, न वो आवाज़ देता है
खुद को सुनाने को, अब उसका नाम लेता है।

कसक तन में उठे चाहे, दर्द मन में होता हो
परेशाँ है मुझसा कोई, वो पहचान लेता है।

ज़रूरत नहीं किसी की, यही तो बेरुखी है
ज़रूरत में तो इन्साँ दामन थाम लेता है।

डरते थे नाम लेने से, उन दिनों जिसका
वो साया है, 'हम' चेहरे का नाम लेता है।

हवा के परिन्दे

किस कदर निकला है, तैयार हो के घर से
परवाज़ में है मंजिल, और दुश्मनी पर से।

परवाज़ उसकी हवायें, चाहे तो क्यों चाहे,
चीर के निकलेगा परिंदा, फिर भी सर से।

खुद ही चल देती है, जिस तरफ जाना है
कोई रिश्ता नहीं है, किसी शज़र से।

परिन्दे और चरागों का, रिश्ता है हवा से
एक तो कामयाबी का और एक डर से।

मुसीबतें कब यहाँ, कह के आती हैं
आ जाती है 'हम' कभी इधर से कभी उधर से।

मन मयूर

मौन तपस्या करने से संतोष आता है
मन मयूर आनन्द ताल में गोत लगाता है

डूब-डूब कर उठते हैं, जो ज्वार हृदय तल में
साक्षी रह के कर्म करे, रुचि नहीं फल में
ऐसे आनन्द में रत मन निश्छल हो जाता है
मन मयूर आनन्द ताल में...

मेरा नहीं कुछ दुनिया में मान नहीं पाता है
जो मिलता अपनेपन से कुछ देकर जाता है
बस देने के ही स्वभाव से तू सब कुछ पाता है
मन मयूर आनन्द ताल में...

है प्रतिष्ठा मनुष्य जीवन की इस उपवन में,
मन में पुष्प खिले चाहे, वो रहे किसी वन में,
स्वार्थ रत मन है पशु सम, वो निर्जन पाता है
मन मयूर आनन्द ताल में...।

जमीं को आसमां कर ले

ले आ मुसीबत का सामना कर ले
इस जमीन को ही आसमां कर ले।

जो लोग जानते हैं, वो ही कहेंगे
जितनी है करनी, उतना करेंगे
फूलों सा दामन, काँटों से भरेंगे
आ खुदी को इतना बुलंद कर ले
इस जमीन को ही...

खुद जिसके लिए मारे फिरते हैं
सपनों में भी उसकी तमन्ना रखते हैं
अपनी करनी कर, वो यूँ ही कहेंगें
तो आ फिर, अब ओखली में सर दे
इस जमीन को ही...

जिसको जो चुभेगा, वो ही कहेगा
बात के बहाने, छुप के बदला लेगा,
होना है फिर जो, वो हो के रहेगा
बातो में फिर अपनी, 'हम' मिठास भर ले
इस जमीन को ही...।

देव प्रार्थना

हे देव तुम सोये रहे क्यूँ, धरा भी ये बदल गई
क्यों देते हुए वरदान हमें, जिह्वा तुम्हारी फिसल गई।

अतुलित सम्पदा तो दे दी, क्यूँ धैर्य हमारा लूट लिया
रहे धरा समृद्ध हमारी, सुख निरंतर क्यों ना दिया।

प्रेम दिया प्रगाढ़तम तो, साथ वैर क्यों लगा दिया
सुन्दर सजग सरल मानव को, स्वार्थ पुजारी बना दिया।

हाथ तुम्हारे जब सब था, चैन हमारा चुरा लिया
कर्कश कठोर उद्दण्डता से, अन्तर्मन उद्विग्न किया।

संतति तुम्हारी स्नेह वत्सला, हुई सृजनहीन और भयकारी
मूल स्वरूप पर भारी है 'हम', छल कपट दुनियादारी।

मुस्कुरा के मिल

मायूसी में सोते हैं, दुख में जाग जाते हैं
बेज़ार हक़ीक़त में ख़्वाब मुस्कराते हैं।

वक़्त रहते जिसने, दवा न की
वे नासूरों में उलझते जाते हैं।

जिस किसी से मिल, मुस्कुरा के मिल
लोगों से मिल के अपने, ग़म भाग जाते हैं।

रास्ता है खूबसूरत, है दूर मंज़िल
चलने वाले ही बस पहुँच पाते हैं।

जी के जंजालों में, वक़्त ना खराब कर
बुज़दिल है वो, जो बैठे रह जाते हैं।

अपनी कही नहीं, उनकी ना सुन सके
कैसे-कैसे लोग, 'हम' दुनिया में आते हैं।

ऐसे डरते हैं लोग क्यों?

दुनिया बसी हुई है, उजड़े हैं लोग क्यों
बैगरत सा पसीना, महके हैं लोग क्यों।

ज़िंदगी सारी बहादुरी में गुजारी
मरते समय ही, ऐसे डरते हैं लोग क्यों

हँसते रहे जमाने भर पे लोग जो
खुद पे आ लगी तो, रोते हैं लोग क्यों।

कहने को जब दास्ताँ है उम्र भर की
दो ही पल का किस्सा होते है लोग क्यों।

करने चले थे भला, जब दूसरों का वो,
खुद का किया, और लौट आए लोग क्यों।

पर्दा उठा नहीं था और कर गुज़र गये
दिखाने भर को 'हम', करते है लोग क्यों।

अभिमन्यु

ना आस ने हिम्मत हारी थी, बस दूजे की बारी थी
कस कमान उठ तीर चला, अभिमन्यु सा वीर चला।

बचा रहा शकुनि जब, अर्जुन को ही बींध चला
ऐसा अन्त भला हो कैसे, ना तीर चला, ना वीर चला।

वीर है जो धीर है, एक लक्ष्य ही गंभीर है
मौन हुए हैं शब्द सभी, आँखों से बह नीर चला।

घोर तपस्या कलियुग की, दिखलाती है ये भी दिन
युग परिवर्तन शाश्वत है, तृण-युद्ध अति गंभीर चला।

मन खट्टे हैं...

मन खट्टे हैं परेशान हैं

नंदन वंदन, माटी चंदन
जंगल बीहड़, पर्वत क्रन्दन
सुर नहीं, पर अजब तान है
नीति-अनीति हैरान है
मन खट्टे हैं, परेशान हैं।

सुन्दर सजकर आये राजा
बजा गये जन हित का बाजा
टका सेर भाजी टका सेर खाज़ा
बने फरिश्ता, शैतान हैं
मन खट्टे हैं, परेशान हैं।

ईमान भोगता वैधव्य दुपहरी,
बेईमान संध्या मनोहारी
दुस्साहस है ढोल बजाता
साहस मौन है बिना प्राण है

कितनों के घर बने

आँसू जो किसी के, आँख की चमक बने
इरादों में बुलन्दी, दिल में लचक बने।

कब तक रहेगा कोई, अपनों के भरोसे
ग़ैरों में भी अपनेपन की कसक बने।

ज़ुल्मों सितम के खिलाफ़, आवाज़ उठाये जा
लड़ने वाले ही, इक दिन सिंकदर बने।

वो भी ज़ोरदार है, ये भी असरदार
अपना भला है किसमें, कुछ तो समझ बनें।

धीर से गंभीर से, मेहनत से काम कर
इक दिन की लूट से, कितनों के घर बने।

जरूर दो

बुरी बात को लानत जरूर दो
अच्छा करने वालों को तोहफ़े ज़रूर दो।

शमां जलाए बैठा है, स्याह रात में
रोशनी ना सही, हौसला जरूर दो।

कड़वाहट में बिताई है, ज़िंदगी जिसने
कुछ हो न हो शहद का कतरा जरूर दो।

अमृत ना मिले तो, प्यास तो ना मरे
प्यार के सागर से, कुछ बूंदें जरूर दो।

मौत से लड़ेगा, हर आदमी ही ख़ुद
साथ की दुहाई, ज़िंदगी जरूर दो।

साथ ना चल सकोगे हर किसी के तुम
'हम' को साथ चलने की हिम्मत जरूर दो।

क्या बताएं?

स्याह हुए हैं दामन, दिन-रात क्या करें
झुलसे हुए हैं चेहरे, आग क्या करे।

ये नीति ही तो राज है, फाश क्या करें
सबको पता है जो, वो बात क्या करें।

फटे हुए हैं पहरन, पहले से ही उनके
सरे बाज़ार फिर से, 'हम' तार-तार क्या करें।

तपन है बहुत, पसीना है इतना
अपने ही दामन के पास क्या करें।

थक चुके 'हम' बहुत बोल-बोल कर
बेअसर जुबां खाक क्या करे।

बदतमीज़ी

बदतमीज़ी की बड़ी नुमाईश रही है
हर किसी की फौज में, गुंजाइश रही है।

आदमी है, कभी तो काम आयेगा
यही आजकल पैमाइश रही है।

सीख न जाये वो रोटी कमाना भी
इसलिए ही मक्खन की फरमाइश रही है।

और ऊँचा उड़, और ऊँचा कूद
हड्डियाँ तोड़ने की आजमाइश रही है।

खुद का सोचा, तो अकेला रहेगा
सब का सोचने की 'हम' गुज़ारिश रही है।

आधा पन्ना पूरी बात

आधा पन्ना और पूरी बात
कैसे लिखूं सारे जज्बात

मुस्कुराहट होठों पे
खामोशियां दिल में
भरोसे की सुबह है
उम्मीद की है रात...

तन्हाइयों का झमेला है
चाहत है, तेरा मेला है
अकेला नहीं हूँ
है कोई साथ...

सदा हूँ साथ तेरे
तो है परेशां क्यूँ
उठा कलम और
थाम ले हाथ

अक्स रहे दिल में
ना जिक्र हो जुबाँ से
जो बात करूँ उनकी
लफ़्ज़ कहे 'हम' तेरे साथ।

खानदान के नाम

ले मुनाफा काम कर
खानदान का नाम कर
मिर्च, टमाटर, आलू, हल्दी
बैंगन, धनियां आम कर।

नीति–अनीति दुश्चक्र अनूठा
जल सूखा और खेत रूठा
खाद बीज नाराज हो चले
हमको ना बदनाम कर।

कम हो चला उत्पाद खास कर
धानी बाली फली नाश कर
बेल बूंटे फूल घास कर
बस रसायन कुछ खास कर।

गाय, बैल, हल, कुआं पराये
बाहर से जो दाने आये
घर के दिन कमजोर पड़े अब
तू रोशन पराई शाम कर,
खानदान का नाम कर।

छोटे दिल लोग

छोटे दिल और तन्हा लोग
दे दो इनको छप्पन भोग

पढ़े नहीं पर ज्ञान भरा है
अंतस सूखा, मांगे तरा है
भरी है नफरत, इश्क जरा है
इन्हें लगा है खुद का रोग

घर से ना निकले चोटी चढ़ा दो,
उठे नहीं कदम, पर आगे बढ़ा दो,
चाँद–सितारे, कुछ भी दिला दो
पूरी पृथ्वी का चाहें भोग

दुनिया धायी, ये भूखे हैं
कल्पवृक्ष है, पर सूखे हैं
स्वप्न सलोने, खूब भरे हैं
इन्हें रुचे ना, कोई जोग।

अच्छे लोग

लोग कितने अच्छे होते हैं
लड़ते हैं अपनों के लिए, अपने देश के लिए
अपनी जात और परिवार, फिर बच्चों के लिए
मगर एक दिन इन्हीं से लड़ रहे होते हैं,
लोग कितने अच्छे...

मिल जाए कुछ तो खुश हो जाते हैं,
जुटते हैं, फिर थक के सो जाते हैं,
मांगे हुए को खोने पर, ग़म से रोते हैं
लोग कितने अच्छे होते...

झगड़ते हैं अपने असबाब के लिए
अपनी बात और जज़्बात के लिए
खुद गलत मजबूर हो, चुप होते हैं
लोग कितने अच्छे होते...

खुद की गणित है, और खुद के रसायन
खुद के ही है जाले, उधेड़ बुन वाले,
चवन्नी के चक्कर में, रुपया खोते हैं,
लोग कितने अच्छे होते है...।

क्या होगा

अभी तो प्यार है
कल दुश्वार में क्या होगा
जिएँगे किस तरहा
और संसार में क्या होगा

मिले ना आबो हवा किसी गुल को
ख़िज़ां में कोई बात नहीं
रहेगा यही मंज़र ग़र,
यहाँ बहार में क्या होगा

ये अलग बात है कि
रो लिए उसके बिना तनहा
मिलेगा वो मगर हँसता हुआ
'हम' बाजार में क्या होगा।

किए जा रहे हैं

इरादे नहीं पता ज़िंदगी के
बस जिए जा रहे हैं
तरीके नहीं पता बंदगी के
बस किए जा रहे हैं
कोई खता कैसे हुई
पता पा रहे हैं
ये रिश्ते हैं तुम्हारे
हम निभा रहे हैं
उम्र गुजार दी 'कुछ' करने के लिए
और यही 'कुछ' नहीं कर पा रहे हैं
बस जिए जा रहे हैं
आप सुनोगे नहीं यकीन है
फिर भी 'हम' आवाज लगा रहे हैं
बस किए जा रहे हैं।

बेकसी

ये बेकसी, बे-नूरी, बेलगी,
जीना सिखाती है...
जी ना जी, ज़िंदगी खुद आ जाती है

वे बे-मुरव्वत निकले, जिनके लिए
निकले थे, हम घर से
ये तन्हाईयाँ रुसवाईयाँ खुद आ जाती हैं

कम पड़ता है दामन
जिस एक खुशी की खातिर
अश्क, सोग, दुख समाते हैं
और मायूसी भी आ जाती है

रोशनी की चाह में भले रहे 'हम' यहाँ
पर ये अजब चाँदनी है,
जो अंधेरा कर जाती है।

सौंदर्यपूर्ण है

सब कितना सुहावना सौंदर्यपूर्ण है
आँखों के प्रेम से सब माधुर्य पूर्ण है

कोमल, निर्मल, भोला भावन
रक्त सिक्त भीगा, सौंधा सावन
कितना सुनहरा ओजपूर्ण है...

है तेजस्वी किरण चमकती
चेहरे पर बिजलियाँ दमकती
कितना मनोहर गरिमापूर्ण है...

मादक, मुलायम, रंग-रंगीला
मोहक, कसक भरा फागुन
कितना मधुर लालित्यपूर्ण है...।

जीवन का रहस्य

ज़िंदगी खुद इक मासूम सवाल है
जी लो जी भर के, ये ही जवाब है।

खुद परेशाँ है, औरों को भी करेंगे
जी नहीं पाते, कैसे जीने देंगे।
तुझको जीता देख, जल-जल मरेंगे
दुश्मनी चैन से जिनका असबाब है।

कंकर फेंक कर झील का पानी हिलाया
ये अलग बात है, दरिया ना रोक पाया
कहने को कहानी बस, कुछ और होना पाया
अब समंदर का बिगाड़ना, उनका ख्वाब है।

जिनसे हुआ नही कुछ, वो बाते बनाते हैं
करते है दो और सौ गिनाते हैं
गिरते है रोज और ठोकर खाते हैं
एक अदद मुस्कान 'हम' उनका जवाब है
जी लो जी भर के...।

जब से मैंने प्रीत लगाई

जब से मैंने प्रीत लगाई, जग को अपना सा पाया
चमक खुशी की काले गालों पे
रेशम-रेशम गंदे बालों पे
गहराई धुंधली आँखों की,
दाग बने सौन्दर्य चिह्न, चंदन जैसी सबकी काया
जग को अपना सा पाया

जब से मैने प्रीत लगाई
हर बच्चा, सच्चा सोने सा
झिलमिलाते दिखता था
साँस-साँस मेरी जाति की
अपने कुल का लगता था, सब पर मेरी माँ का साया
जग को अपना सा पाया

जब से मैंने प्रीत लगाई
हर चेहरे में सुन्दरता थी
रोम-रोम में अपनापन था
खत्म हो गई हर दुश्मनी, देख मेरा मन हर्षाया
जग को अपना सा पाया।

एक बस फुर्सत नहीं

एक बस फुर्सत नहीं है...

श्रमवीर युवा के कदमों को थकने की
प्रतिभा से महके चहके इंसाँ को तकने की
अपनेपन में रचे-बसे लोगों को रुकने की
खीर बनाते माँ के हाथों को चखने की
प्रेम प्यार में डूब चुके बालों को पकने की
प्रीत निभाने वालों को दुश्मन रखने की
बोझ उठाती गृहस्थी के कंधों को थकने की
फ़र्ज़ निभाते लोगों की आँखों को झुकने की।

एक बस फुर्सत नहीं है...।

लोग

मीठे सीधे सच्चे लोग,
कडुवे तीखे बाँके लोग
अपनेपन को रोज-झगड़ते
बेगाने से मौन साधते लोग

जीवन में उल्लास बाँटते
सूखे में मधुमास बाँटते
बैर में वनवास काटते
सुख में निश्चल आस बाँटते लोग...

कैसे कैसे प्रेम जताते
कब कब कितना वैर बताते
बस ज़िंदगी खास दिखाते
जीवन में विश्वास जताते लोग...

ब्रह्म अंश पर आत्मकेन्द्र हो
उन्नत शिक्षित सत्य जांचते
सच्ची श्रद्धा पुराण बांचते
लक्ष्य उच्च और मुक्त बताते लोग...।

पंछी तो पंछी रहेगा

पंछी तो पंछी रहेगा
दाने हैं, जाल हैं,
शिकारी कई हैं
चालें भी उसकी नई–नई हैं
कुछ न कहेगा, उड़ के रहेगा

उस को दिया दाना
शिकारी ने पाया,
शिकारी के हाथों, जाल में आया
जाल में पड़ा, तो पंछी ने खाया
उसका दिया है, उसी का रहेगा

उलझ गया है तो,
अब न उड़ेगा
जमाना तो शिकारी को कहेगा,
पाप लेगा माथे बस पेट भरेगा

जो हल्का है उड़ लेगा
भारी है शिकारी,
जुल्म की तोहमत लेगा
पाप है, 'हम' दोज़ख दे के रहेगा।

मेरी आँखें उन्हें पसंद आती हैं

मेरी आँखें भी उन्हें पसंद आती हैं
यही चाहत दिल को छू जाती है।

छोटी थी ये काली थी,
बेशक शर्माने वाली थी,
खूब खुली थी बन्द हुई थी
उनींदी रहने वाली थी।
जब से तुझ से चार हुई
कभी ना मेरी यार हुई
बस तुझे देखना चाहती हैं

चंचल थी ये निश्छल थी,
गंगाजल सी निर्मल थी
पहले दो थी, अब चार हुई,
तब से ही बेकार हुई।
प्रेम के पथ पर लग थक कर,
कितनी पानीदार हुई
छम–छम नीर बहाती है

...और ये हालात

भ्रष्टाचार

रिश्ते उसी के, उसी का ईमान है
है अजनबी सब, मगर खानदान है।

होते नहीं थे कभी, झूठ के भी पैर
पर अब देखता हूँ, पट्ठो में बहुत जान है।

खायेंगे कब साहब, मिलेगी कब रोटी,
सारे गरीब, ये सोचकर परेशान हैं।

हिस्सा जो मुल्क की तरक्की में तय था
कुछ नहीं है, अब कमीशन की दुकान है।

छोड़ दिया क़ातिल को, 'हम' आदमियत में आकर
वो सोचता है, किए जा, मालिक मेहरबान है।

बेईमानी का मुजरा

बेईमानी का मुजरा, शामें रंगीन हैं
ईमानदारी विधवा, दोपहर ग़मगीन है।

उनके यहां पे मेला, महफ़िल आबाद है
मुफ़लिसी का यहां आलम, जैसे जुर्म संगीन है।

ताकत बुजुर्गों की, क्या कर गुजर गये
इन दिनों कुछ उच्चके भी, नामचीन हैं।

नाच रहा है चौराहे पे, जो बेपर्दा हुआ
ओढ़े हुए लबादे, बैठा कुलीन है।

जीते हैं अजब लोग झूठ ओ ख़ार में
है फिक्र क्या 'हम' जो फाके-मस्ती में दीन है।

रिश्तेदारियाँ

सड़क खा गया, वो रिश्ते का भाई है
बिजली नहीं जली बस, बिल का जंवाई है।

मार ना डाले कोई एक चोर को
मौसेरों ने मिलकर फौजें बुलाई है।

सारे भाई भतीजे इकट्ठे हैं बाग में
कांटों के लिए फूलों ने कीमत चुकाई है।

एक से मिलेगा तो दूसरे को देगा
यही सोच साझेदारों ने रातें बिताई हैं।

हर इक से है रिश्ता, इस कायनात में
ये कैसी पैगम्बरी है, 'हम' कैसी खुदाई है।

जख्म धोता है शहर

इस सुंदर शहर पे धूल गिराओ
जाओ अब तुम कुछ पैसे बनाओ।

तहजीब ओ परम्परा बेमानी है
मिज़ाजपुर्सी में विलायत घूम आओ।

बूढ़े बुजुर्ग तुम्हारे कल के थे
आज नये दौर में बच्चे सिखाओ।

यही करेंगे बच्चे एक दिन
फिर नई पीढ़ी पर आँसू बहाओ।

ऐसे जख़्म धोता है शहर अपना
पहले धूल गिराई, अब आँसू बहाओ।

हाकिम का प्रचार

उतार ले तस्वीर, छाप दे अख़बार में
पढ़ लेगा शहर, कल समाचार में।

कोई बिका है कल, कोई टूटा है रात में
मरे जा रहा है हाकिम, केवल प्रचार में।

गिरने की कोई सूरत, इस दरीचे से ना थी
कमजर्फ़ आए जंग में, तो बियांबा बहार में।

जो तेरा उसूल था, तो क्या मेरा कसूर था
काटी थी ज़िंदगी, बेवफा के इन्तज़ार में।

ये कैसा रिश्ता है, आग के दरिया से
जलना ही लिखा है, हम जिसके प्यार में।

नाम के सरकार

सुर है ना ताल है, बस नाम के सरकार हैं।

जा रहे हैं, चाह रहे हैं, बस में नहीं रफ्तार है
जिम्मेदारी से इनकार है, बस नाम के सरकार हैं।

आंख दिखाते लोग हार कर, क्रोधित होते बात बात पर
चुप बैठे पर समझदार है, बस नाम के सरकार है।

इतना उन्नत अर्थशास्त्र है, डगमग नैय्या मझधार है
भूखा आदमी पानीदार है, बस नाम के सरकार है।

सूखे वन उपवन तरसे, अति ओ अनावृष्टि में उलझे
यही इनका कारोबार है, बस नाम के सरकार है।

बख्शीश मेहनताना है

बालकनी भी उसकी और दुश्मनी भी
शहर के लोगों से यही तो याराना है।

लूट कहो या तुम घूस कहो इसे
उनके लिए लेकिन ये किस्मत का खजाना है।

मोहताज हो गये हम इक ईमान के
कानून है हाथ में, और बख्शीश मेहनताना है।

शहर की सारी मंजिलें, 'लाख' में बना दी
आपको भी इसी शहर में सर छुपाना है।

बैठे है बाज़ार में 'हम', सर पे रख के हाथ
माचिस भी गीली है और दीया भी जलाना है।

एक दिन

तलवार हाथ में, और गाय छुड़ा ली
पकड़ने वालों के हाथ में बस डंडा रह गया।

निकलते ही नहीं, घर से तो अच्छा था,
बस नक्शा बचा रहा, और मकान ढह गया।

बिना 'बात' की इमारत, उन्हे पसंद नहीं
हाँ अगर 'बात' तो हो चुकी है तो खजाना रह गया।

क्या कर लेगा कहता है, मुझसे सरेआम ज़ालिम
ईमानवालों के पास तो सिर्फ ताना रह गया।

बन्दर हैं हम, और मदारी भी हमीं हैं
आवाम के हाथ में जो अब नचाना रह गया।

इन हालातों पर कह दिया

इन हालातों पर कह दिया
ना कुछ दिया और ना लिया।

सही गलत क्या, मैं जानूं
बस मन की ही मैं मानूं
मन ने कहा वो लिख दिया।
इन हालातों पे कह दिया।

खूब भरम है दुनिया में
खूब धरम है दुनिया में
एक करम ये ही किया
इन हालातों पे कह दिया।

दुनिया पेचीदा मसला है
सबका अपना अमला है
सबसे सरल 'हम' ने किया
इन हालातों पे कह दिया।

आसमां दिखायेंगे

वो जब जमीं पे आएँगे, उनको आसमां दिखायेंगे
सौदागर हवाओं के, क्या जन्नत बतायेंगे।

जलालत की ज़िंदगी से, मौत अच्छी है
खुद्दारी रखने वाले, ये कर दिखायेंगे।

इस बार न सही, अगली दफा होगा
सच पे लड़ने वाले, जब जीत जाएँगे।

ना तुम करीब हो, ना हम ही दूर है
रिश्ते हैं ज़िंदगी के, आयेंगे-जायेंगे।

चल सको जो साथ, ग़र चार पग भी तुम
आ ही जाना फिर, 'हम' आवाज लगायेंगे।

क्षणिकाएं

(1)
मेरा सुकून आप से क्यूं है
आपसे बेचैनी मुझ में क्यूं है।

आप एक अच्छे लगते हैं
ये बात इतनी बड़ी क्यूं है।

(2)
घेर के बैठेंगे, मुस्कुराएंगे
बारी-बारी से सब निकल जायेंगे।

हम जब मिले थे, ये उस वक़्त भी थे
क्या तुझे अब ये हमसफर बनायेंगे।

दिल की बातें 'हम' दिल की रहती है
जमाने वाले लाख किस्से सुनायेंगे।

(3)
ले तो लूँ तुझे पर चोर नहीं हूँ
जीता हूँ खुद को, कोई और नहीं हूँ
लम्हा हूँ रिस जाऊँगा, दौर नहीं हूँ
खामोशियों की जुबाँ हूँ, शोर नहीं हूँ।

(4)
हाल जो पूछूं तो सर हिला देता है
कुछ भी मांगू, तल्खी से पता देता है
हर इज़हार पर, अंदाज बता देता है
तरसते के सीने में आग लगा देता है।

(5)
मीठी थी ना खट्टी थी
बिल्कुल सीधी सच्ची थी
दिखता था वो कहती थी
जो था वो बतलाती थी।
उसकी खुशियों के कारण
अपनी उम्मीदों की खातिर
अब ये राज छुपाती है।
ये बातें मुझे पसंद आती है।

(6)
पन्ने सुहाने लिखे जिनके नाम
बस एक वो खुश ना हुए
मजबूर ज़िंदगी इस कदर
हो गया सब, दिन ही पूरे ना हुए।